इश्क की डगर पर

सच्चे इश्क की दास्तान को अपने में समेटे, सारे संसार को पाक मुहब्बत का पैगाम देती हुई, एक बहुत ही खूबसूरत लाजवाब और बेमिसाल इमारत हमारे देश में है, जो ताजमहल के नाम से विश्व में प्रसिद्ध है। इसे संसार का आठवां आश्चर्य भी कहा जाता है। इसका प्रमुख आकर्षण इसके भीतर छिपे हुए आत्मिक इश्क से है। इस आलौकिक इश्क के प्रमाण का स्वरुप, बाह्य जगत में, कदाचित इसलिए दर्शाया गया है कि उसी के दृष्टांत को देखते हुए, दिल अर्श में भी एक ताजमहल निर्मित हो जाये। यदि हमारे भीतर अपने आत्मधनी के लिये थोड़ा सा भी इश्क, थोड़ा सा दर्द और थोड़ी सी बेकरारी हो जाये तो अन्तःकरन में एक विशाल जागनी स्तम्भ का शिलान्यास तुरन्त ही प्रारम्भ हो जाये। हमारी श्री मुखवाणी इस बात की साक्षी, निम्न चौपाई के द्वारा इस प्रकार देती है :-

इन लीला का जोकरसी विचार, क्या करसी ताको संसार।
प्रगट नीऊ बांधी है एह, बड़ी इमारत होसी जेह।।

प्रकाश हि० प्र० १७ चौ. ६

अखण्ड परमधाम की लीला का जो विचार करेगा उसका संसार कुछ भी न बिगाड़ पायेगा। इस वाणी ने बड़ी पक्की नींव बांधी है और इस पर अब इश्क और ईमान की बहुत भव्य और विशाल इमारत बनेगी। इस शानदार इमारत में दो कब्रें हैं, जो मन और जीव की हैं। संसार की ओर से मरना और परमसत्य में जाग्रत होना ही तो जागनी है। इसके निर्माण में सफेद संगमरमर के पत्थरों के स्थान पर, जागृत बुद्धि के ज्ञान की दिव्य किरणों का प्रयोग हुआ करता है, तभी रुह मोह सागर से नूर सागर में प्रविष्ट हो सकती है। इसके निर्माण का कार्य मजदूर और मिस्त्रियों की फौज के स्थान पर अपने ही गुण अंग इन्द्रियों की सेना करती है। संचालन का कार्य मन चित्त बुद्धि और अहंकार, जिनका संचालक जीव है, स्वयं किया करता है।

जब इश्क और ईमान की एक विशाल और सुदृढ़ इमारत दिल में निर्मित हो जाती है तो इसका साक्षात स्वरुप बाहर भी दिखाई देता है। रतनपुरी निजानन्द आश्रम, निजानन्द आश्रम बड़ौदा और विभिन्न शहरों में निर्मित बारह भव्य प्राणनाथ मन्दिर। इन सब के पीछे श्री राजजी महाराज के मेहेर, इश्क, हुकम जोश और आवेश की शक्तियाँ है। इन दिव्य न्यामतों का समन्वय जिस वजूद में साक्षात हुआ, उन्हें हम सब सरकार श्री, जागनी रतन, ब्रह्म मुनि जगदीश चन्द्र जी के नाम से जानते हैं। यद्यपि वो महान युग पुरुष, आज स्थूल रुप से हम सब सुन्दरसाथ के लिये एक प्रेरणा स्त्रोत है। अपने सतगुरु परमहंस रामरतनजी को धनी के रुप में पहचानकर, उनके ऊपर स्वयं को तन मन और धन से कुरबान कर दिया। उनके जीवन का दर्शन एक दिव्य प्रकाश स्तम्भ की भांति हम सब का मार्गदर्शन कर रहा है। जो विशाल आश्रमों और मन्दिरों की स्थापना उनके कर-कमलों

Nijanand App

के द्वारा हुई है, उस अध्यात्मिक संपदा का सरंक्षण और विस्तार करना, हम सब सुन्दरसाथ का परम और प्रथम कर्तव्य है। उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व बाहर और अन्दर से इतना प्रभावशाली था कि एक झलक मात्र का दर्शन जीवन पर्यन्त के लिये पर्याप्त है। उनके चेहरे पर जो प्रेम की मस्ती छलकती थी, वह यह पैगाम देती प्रतीत होती थी कि धामधनी ने उन्हें अन्दर बाहर हर तरफ से धन्य-धन्य कर दिया है। उनकी भाव भरी गहरी नज़रें जुबान बन कर सुन्दरसाथ को यह बताती हुई प्रतीत होती थी :-

धनं धनं सखी मोको कहे दिल के सुकन, धनं धनं पायों मैं तासों आनन्द अतिघन।
धनं धनं मनोरथ किए पूरन, धनं धनं स्यामे सुख दिए वतन।।

किरन्तन - प्र० ८४ चौ० ८

प्राणों के प्रीतम, आतम के आधार श्री राजजी महाराज के अति लाडले, प्यारे सुन्दरसाथ जी। मेरे धामधनी ने मुझे दिल की बातें बताई जिससे मुझे बहुत आनन्द आया। धनी ने मेरी सारी इच्छाओं को पूरा किया। श्री राजजी महाराज ने मुझे अखण्ड घर के सुख दिये। इसलिये मैं धन्य-धन्य हो गई।

प्यारे सुन्दरसाथ जी, हकीकत तो यह है कि हमें यह मालूम ही नहीं है कि इश्क, प्यार, मुहब्बत कहते किसको हैं? आइये हम अपनी यहाँ की तुच्छ बुद्धि से परमधाम के इस महत्वपूर्ण और मूल विषय पर कुछ विचार करने का प्रयास करें क्योंकि यह कहा गया है 'जो विचारसी सो जागसी'। जाहिरी और बातूनी दोनों ही दृष्टियों से यदि विचार करें तो किसी फिल्म के एक गाने में प्रश्न और उत्तर देखें - मुहब्बत कहते किसको हैं? यह शुरु कहाँ से होती है? यह रहती कहाँ है? यह खतम कहाँ होती है? इन प्रश्नों के उत्तर बखूबी क्रमशः इस प्रकार दिये गये है :- मुहब्बत कहते मन को हैं, यह शुरु आँखों से होती है। यह रहती दिल में है यह खतम सांसों से होती है। अब हम अपनी श्री मुखवाणी जिसका केन्द्रबिन्दु आत्मा है, उसके आधार पर विश्लेषण करेंगे।

जो आसिक असल अर्स की, जो क्यों सकुचे देते जिउ।
करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पिउ।।

किरन्तन-प्र० ६१-चौ० ५

जो धाम धनी के असल आशिक हैं, वे अपने जीव तक की कुरबानी देने में संकोच नहीं करेंगें। वे अपने प्राण को श्री राजजी महाराज पर कुरबान करने के लिये करोड़ों बार तैयार रहेंगें।

तो अंग आधा अरधांग, मासूक का आसिक।
तो दोऊ तन एक भये, जो इश्क लाग्या हक।।

इसलिये तो आशिक मासूक की अंगना कहलाती है। जब पारब्रह्म से इश्क होता है तो दोनों तन एक हो जाते है। आशिक आठो पहर माशूक की नज़र में बसा रहता है और निडर होकर मासूक

Nijanand App

नज़रे करम का रस पान करता है। आशिक को कभी भी माशूक को याद नहीं करना पड़ता क्योंकि वह एक क्षण भी जुदा नहीं होता। आशिक को माशूक की मस्ती का ऐसा नशा चढ़ा रहता है, जो कभी नहीं उतरता।

मासूक की नज़र तले, आठों जाम आसिक।
पिए अमीरस सनकूल, हुकम तले बेसक।।
न्यारा निमख न होवही, करना पड़े न याद।
आसिक को मासूक का, कोई इन विध लाग्या स्वाद।।

कि० - प०-६१ चौ०-१५-१६

आशिक के अंग के रोम रोम में उसका माशूक समाया रहता है और इश्क में दोनों एक ही मस्ती में होते हैं। धाम धनी अपनी आशिक ब्रह्मसृष्टि से एक पल के लिये भी जुदा नहीं होते। इसलिये आशिक के आत्मिक बल का वर्णन यहाँ की जुबान से कर पाना संभव नहीं है ।

रोम-रोम बीच रमि रहया, पिड आसिक के अंग।
इस्के ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग।।
इन जुबां इन आसिक का, क्यों कर कहूं से बल।
धाम-धनी आसिक सो, जुदा होए न सकें एक पल।।

किरन्तन - प्र०-६१ चौ-१७-१८

कुरान में भी दो प्रकार के इश्क का वर्णन है - इश्क मज़ाजी और इश्क हकीकी। इश्क मज़ाजी यानि संसारिक इश्क। यह संसार के किन्हीं दो लोगों प्रेमी-प्रेमिका, पति-पत्नी के मध्य हुआ करता है। नश्वर जगत में इसकी उत्पत्ति के कारण इसमें स्थायित्व कम, अहम और स्वार्थ की अधिकंता के कारण इसका आकर्षण निरन्तर नहीं रह पाता। इसके विपरीत इश्क हकीकी, पूर्ण ब्रह्म पारब्रह्म के साथ एक शाश्वत आत्मिक बंधन है, जहाँ अद्वैत की लीला है। वाहेदत अर्थात एक ही स्वरुप में विलीन हो जाना ही इश्क हकीकी है। इसी अद्वैत भाव को स्पष्ट करने के लिये ही सागर और लहर, सूर्य और किरण के उदाहरण इस संसार में दिये जाते हैं। जैसे लहर ही सागर है और सागर लहरों से ही बनता है। इसी प्रकार किरणों से विहीन सूर्य की शोभा नहीं और सूर्य की रोशनी किरणें ही फैलाती हैं। उसी प्रकार पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की वास्तविक शोभा, उसकी ब्रह्मात्माएं ही संसार में फैलाती हैं। धनी जी की साहिबी का कमाल तो देखिये कि वो अपनी स्वयं ही मेहेर इश्क और जोश के द्वारा अखण्ड घर के रहस्यों को श्री श्यामा जी और रुहों के द्वारा समस्त संसार को बतलाया करते हैं। इस हकीकी इश्क की हकीकत को समझना या समझा पाना भी अति दुष्कर कार्य होता है। वास्तव में जिनके दिल में धनी का दर्द है वही धनी की पहचान कर सकते हैं और वही परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हैं। जाहिरी लोग तो बाहरी बनाये हुए भेष पर यकीन करते हैं, परन्तु अन्दर

Nijanand App

बैठे हुए धनी की पहचान नहीं करते।

दरदी जाने दिल की, जाहिरी जाने भेष।
अन्तर मुस्किल पोहोचना, रंग लाग्या उपला देख।।

कि०-प्र० ६४ चौ०-१५

जागनी रतन सरकार श्री ने इसी हकीकी इश्क के दुगर्म, कठोर, ऊँचे नीचे, टेढ़े मेढ़े रास्ते पर पहले स्वयं चलकर, सुन्दरसाथ के लिये पीछे चलने का एक आदर्श प्रस्तुत किया। अपने धनी के हुकुम पर उन्होंने अपने आप को पूर्णतया समर्पित कर दिया। अपने सतगुरु की शोभा, सुन्दरसाथ का दर्द, श्री राजजी महाराज की वाणी के ऊपर सर्मपण, इन तीनों पर तन, मन और जीव को कुरबान कर दिया। श्री राजजी महाराज तो मेहेरबान हैं, मेहेर के सम्पूर्ण सागर है, बदले में उन्होंने जो शोभा और साहिबी उन्हें बख्शीश की, उसे समस्त निजानन्द सम्प्रदाय भली प्रकार से जानता है। कुरबानी का बिगुल बजने से देश-विदेश में रहने वाले समस्त सुन्दरसाथ में जागृति की लहर सी दौड़ गई। माया से मन हटाकर कोई आगे कोई पीछे, कोई शुरु में आये और कोई आने की तैयारी में हैं। इस तरह से सब सचेत हो गये।

सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन।
कोई आगे पीछे अव्वल, सबे हुए चेतन।।

कि० - प्र० ६२ चौ० - १४

जब जब भी हम सुन्दरसाथ रतनपुरी आश्रम जायेंगे, उन्हें अपने समक्ष न पाकर मन अवश्य व्याकुल होगा परन्तु जब नज़र अपने दिल पर डालेंगे तो वही चिर परिचित मुस्कान, स्वागत का अन्दाज, हमें वही पुनः आत्मबल देगा। जब चितवन से मूल-मिलावा में हम श्री राजजी और श्री श्यामा जी के युगल चरणों में प्रणाम करेगें तो हमें अपने प्यारे सरकार श्रीजी का स्वरुप मूल स्वरुप में दिखेगा। यहाँ पिण्ड के भीतर और ब्रह्माण्ड के बाहर जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सबका सब सपना है। पारब्रह्म इसके अन्दर नहीं हैं। धन्य धन्य है श्री सतगुरु, जिनकी कृपा से दूर परमधाम में बैठे पारब्रह्म के स्वरुप लीला और धाम की पहचान की। इनकी शोभा का वर्णन, शब्दों द्वारा हो ही नहीं सकता।

देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं।
गुर प्रसादें अंतर पेख्या, सो सोभा बरनी न जाही।।

कि-प्र० २ चौ०-८

प्रणामजी

नीरू खुराना, कानपुर

Nijanand App